Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

कक्षा 12 – हिंदी

मैराथन क्लास

पद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

मैंने आहुति बनकर देखा सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन कानन का फूल बने?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रान्तर का ओछा फूल बने?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली सी याद बने?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे?

नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों उसकी हो परवाह मुझे?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मिट्टी जनपद की धूल बने।
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गतिरोधक शूल बने!

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक लिखिए एवं कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक 'मैंने आहुति बनकर देखा' है एवं कवि का नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' है।

2. यह पद्यांश किस काव्य-ग्रन्थ से उद्धुत है?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश पूर्वा 'काव्य-ग्रन्थ से उद्धृत है।

3. उस पद्यांश में कवि का क्या संदेश है?

उत्तर- कवि जीवन को परिभाषित करते हुए बताता है दु:ख के बीच पीड़ा सहकर अपना मार्ग प्रशस्त करने बाला जीवन ही वास्तविक जीवन है।

4. रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या- कवि कहता है कि जिस प्रकार कांटे की श्रेष्ठता उसके कठोर और नुकीलेपन में है, उसी प्रकार जीवन की मर्यादा भी उसके दुःखपूर्ण होने में निहित है।

5. काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पंक्ति का आशय यह है कि काँटे की मर्यादा अथवा श्रेष्ठता उसकी कठोरता व नुकीलेपन में ही निहित है।

6. 'जीवन-मरु' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- 'जीवन-मरु' में रूपक अलंकार है।

7. कवि किसकी कामना नहीं करता?

उत्तर- कवि यह कामना नहीं करता कि संसार उसके कठोर जीवन के अनुरूप हो जाए अथवा उसका जीवनरूपी सूखा रेगिस्तान; देवताओं के उद्यान नन्दन-कानन जैसा हो जाए। साथ ही वह अपना काँटेरूपी जीवन अपनी कठोरता या तीक्ष्णता का त्याग करके वन का तुच्छ एवं कोमल पुष्प भी नहीं बनना चाहता।

वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन-कारी हाला है।
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया
मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है !

(1) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

उत्तर-

- शीर्षक मैंने आहुति बनकर देखा।
- कवि का नाम-सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

(2) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- कवि अज्ञेय का कहना है कि प्रेम जीवन में माधुर्य और सरसता का संचार करता है तथा व्यक्ति को एक नवीन चेतना और उत्साहित करने वाली नव-प्रेरणा प्रदान

करता है। यह निष्प्राण व्यक्ति में भी प्राण डाल देता है। कवि कहता है कि मैंने स्वयं अनुभूत करके प्रेम के सच्चे स्वरूप और उसकी महत्ता को जान लिया है। मुझे प्रेम का यह तत्त्व अथवा रहस्य ज्ञात हो गया है कि प्रेम यज्ञ की उस ज्वाला के समान पवित्र और कल्याणकारी है, जो भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से व्यक्ति के लिए आवश्यक और मंगलकारी है। साथ ही प्रेम के इस मंगलकारी स्वरूप की अनुभूति तथा प्रेमरूपी यज्ञ की ज्वाला के दर्शन उसी समय सम्भव हो पाते हैं, जब व्यक्ति स्वयं प्रेमरूपी यज्ञ में अपनी आहुति देता है। आशय यह है कि कठिनाइयों और बाधाओं को पार करके तथा संघर्ष में तपकर ही हम प्रेम के तत्त्व को पहचान सकते हैं।

(3) कवि ने रोगी किसे बताया है?

उत्तर- कवि ने उन लोगों को रोगी बताया है जो प्रेम को कटु अनुभवों का प्याला बताते हैं।

(4) किनको संवेदनाहीन मृतक की संज्ञा दी गयी है?

उत्तर- जो लोग प्रेम को अचेतन करने वाली मदिरा कहते हैं उनको संवेदनाहीन मृतक की संज्ञा दी है।

(5) कवि ने यह कैसे सिद्ध किया है कि प्रेम यज्ञ की ज्वाला के समान पवित्र और कल्याणकारी है?

उत्तर- कवि ने यह स्वयं व्यक्तिगत गहन अनुभूति के आधार पर सिद्ध किया है कि प्रेम यज्ञ की ज्वाला के समान पवित्र और कल्याणकारी है।

(6) हाला व विदग्ध शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर- हाला – मदिरा, विदग्ध – तपा हुआ/ जला हुआ।

हिरोशिमा

छायाएँ - मानव-जन की दिशाहीन
सब ओर पड़ी-
वह सूरज नहीं उगा था पूरब में,
वह बरसा सहसा बीचों-बीच नगर के
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूट कर बिखर गये हो
दसों दिशा में।
कुछ क्षण का वह उदय अस्त!
केवल एक प्रज्वलित क्षण की दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी

1. वह सूर्य किस दिशा में उदित हुआ था?

उत्तर- कवि अणु बम को प्रतीक मानते हुए कहता है कि अणु-बम रूपी वह सूर्य पूर्व दिशा में उदित न होकर नागासाकी और हिरोशिमा नगर के चौक में उदित हुआ था।

2. दश दिशाएँ कौन-कौन सी है?

उत्तर- दश दिशाएँ है- 1.उर्ध्व 2. ईशान 3. पूर्व 4. आग्रेय, 5. दक्षिण 6.नैऋत्य 7. पश्चिम 8.वायव्य 9. उत्तर 10 अधो ।

3. 'काल सूर्य के रथ' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- 'काल सूर्य के रथ' में 'रूपक' अलंकार है!

4. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या : कवि कहता है कि दोपहर के समय सूर्य सबसे अधिक चमकीला होता है जिससे किसी भी दृश्य की दृश्यता सर्वाधिक होती है। जब हिरोशिमा पर अणु बम गिराया गया

तो उसमे उतना अधिक प्रकाश और ऊष्मा निकली, मानो धरती पर दोपहर का सूर्य ही उतर आया हो। अणुबम रूपी सूर्य का उदय और अस्त होना कुछ ही क्षण में एक साथ हो गया था। वह ऐसा प्रज्वलित (जलता हुआ) क्षण था, जिसने अपने ताप से दोपहरी को भी सुखाकर रख दिया था, अर्थात् इस दोपहरी के सूर्य ने दृश्यों की दृश्यता में वृद्धि नहीं की बल्कि दृश्यों को ही जलाकर राख कर दिया। उस प्रकार वह दोपहर दृश्यों को सोख लेने बाली सिद्ध हुई।

5. मानव-जन की छायाएँ किस दिशा में पड़ीं?

उत्तर- मानव जन की छायाएँ दिशाहीन होकर चारों ओर पड़ी थी।

छायाएँ मानव-जन की
नहीं मिटीं लम्बी हो-होकर :
मानव ही सब भाप हो गये।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं,
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रयोगवाद के प्रवर्तक श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'सुनहले शैवाल' से कविता-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'काव्य-भाग' में संकलित 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- 'अज्ञेय' जी ने कहा है कि परमाणु शक्ति के दुरुपयोग से मानवता त्रस्त होती है। मानव के साथ-साथ प्रकृति और दूसरे जीव-जन्तु भी समूल नष्ट हो जाते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में अमेरिका ने जापान देश के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर परमाणु बमों से हमला किया तो मनुष्य द्वारा रचे गये उस सूर्य की रोशनी में वहाँ की जनता भाप बनकर उड़ गयी थी। लोगों की छायाएँ डूबते सूर्य के प्रकाश में जैसे लम्बी होकर मिटती हैं, वैसी हिरोशिमा में नहीं मिटी थीं, वहाँ तुरन्त ही सब कुछ समाप्त हो गया था। आज तक भी वहाँ की उजड़ी सड़कों और परमाणु बमों की आग से झुलसे पत्थरों पर उस त्रासदी की काली छायाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं।

3. प्रस्तुत अंश में किसका वर्णन हुआ है?+

उत्तर- प्रस्तुत अंश में अमेरिका के परमाणु बमों द्वारा जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों में हुए भीषण नर-संहार का वर्णन हुआ है।

4. परमाणु हमले से कहाँ पर तुरन्त ही सब कुछ समाप्त हो गया? .

उत्तर- हिरोशिमा और नागासाकी नगरों में परमाणु हमले में तुरन्त ही सब-कुछ समाप्त हो गया।

5. हिरोशिमा की उजड़ी सड़कों पर आज भी किसकी काली छायाएँ देखी जा सकती हैं?

उत्तर- हिरोशिमा की उजड़ी सड़कों पर परमाणु बम की आग से झुलसे पत्थरों पर उस त्रासदी की काली छायाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं।